INTELLIGENTSIA
International Journal of Multidisciplinary Research
Volume (1), Issue (3)
October- December, 2025
Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शिक्षा

डॉ. अनिल कुमार सिंह
पूर्व विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

सार :
भारत अनादि काल से ज्ञान-विज्ञान की भूमि रहा है। यहाँ वेदों, उपनिषदों, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, वास्तु और योग जैसी परम्पराओं ने न केवल शिक्षा को दिशा दी, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शन का कार्य किया। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों ने विश्वभर के विद्वानों को आकर्षित किया और भारत को विश्वगुरु का गौरव प्रदान किया। किन्तु कालांतर में उपनिवेशवाद, आक्रांताओं के प्रभाव और आधुनिक भौतिकतावादी प्रवृत्तियों के कारण यह समृद्ध परम्परा हाशिये पर चली गई और लुप्तप्राय सी हो गई। मौजूदा समय में भारतीय ज्ञान परम्परा आंदोलन ने इसे पुनः नए सिरे से देखने और समझने का अवसर प्रदान किया है। शिक्षा के क्षेत्र में आज योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित और नीतिशास्त्र जैसे विषयों पर शोध की अभूतपूर्व गति दिखाई दे रही है। विश्वविद्यालय और शोध संस्थान पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर नए प्रतिमान गढ़ रहे हैं। यह न केवल हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का अवसर है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की वैचारिक धरोहर को साझा करने का माध्यम भी है। निसंदेह इस पुनरुत्थान से भारतवासी अपनी मौलिक परम्पराओं के प्रति गर्व और आत्मविश्वास से परिपूर्ण होंगे। हालांकि सबसे बड़ी चुनौती इसे व्यावहारिक स्वरूप देने और वैश्विक मंच पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की है। यदि भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा, तकनीक और नवाचार के साथ संतुलित रूप से जोड़ा जाए तो यह न केवल शिक्षा को समग्र बनाएगी, बल्कि विश्व को भी शाश्वत मूल्यों और जीवन दृष्टि की नई दिशा प्रदान करेगी। यही भारतीय ज्ञान परम्परा का सच्चा पुनर्जागरण होगा।

कुंजी शब्द : भारत, ज्ञान, परम्परा, शिक्षा

प्रकाशन समयरेखा:
मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 01 सितंबर, 2025; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 03 अक्टूबर, 2025; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 06 अक्टूबर, 2025; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 09 अक्टूबर, 2025
अनुशंसित संदर्भ
सिंह, ए. (2025). प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शिक्षा. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(3), 10 – 14 .

अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारतीय ज्ञान परम्परा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण विरासत है, जो वेद, उपनिषद, गुरुकुल प्रणाली, और आयुर्वेद, योग, और गणित जैसे क्षेत्रों में निहित है। प्राचीन भारत में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने वैश्विक शिक्षा को दिशा दी, जहां दर्शन, विज्ञान, और कला का समन्वय होता था। आधुनिक संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने पर जोर दिया है, ताकि सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक शिक्षा का संतुलन स्थापित हो। यह परम्परा समग्र शिक्षा, नैतिकता, और जीवन कौशलों पर केंद्रित है, जो आज की डिजिटल और वैश्विक चुनौतियों के लिए प्रासंगिक है। हालांकि, औपनिवेशिक प्रभाव और पाश्चात्य शिक्षा मॉडल ने इस परम्परा को हाशिए पर धकेल दिया। उपरोक्त पृष्ठभूमि में इस अध्ययन का उद्देश्य , भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्वों, जैसे योग और वैदिक गणित, को आधुनिक शिक्षा में पुनर्जनन की संभावनाओं का मूल्यांकन करना, साथ ही इस एकीकरण में आने वाली चुनौतियों, जैसे मानकीकरण और शिक्षक प्रशिक्षण, का विश्लेषण कर समाधान प्रस्तावित करना है।

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शिक्षा

यूरोप में ज्ञान-विज्ञान की परम्परा का आरंभ होमर (8वीं शताब्दी ईसा पूर्व) से माना जाता है। यह निस्संदेह एक ऐतिहासिक आश्चर्य है कि पूरे यूरोप का बौद्धिक आधार उस समय मुख्यतः होमर की कविताओं और काल्पनिक वीरगाथाओं तक सीमित था। इलियड और ओडिसी जैसे महाकाव्य साहस, युद्ध और देवकथाओं के आख्यान थे—इनमें सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना अवश्य झलकती है, किंतु व्यवस्थित दर्शन, गणित या विज्ञान का विकास अभी बहुत दूर था। इसके विपरीत, उसी समय भारत ज्ञान-विज्ञान का संगठित और गहन केंद्र बन चुका था। वैदिक काल में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद का संकलन हुआ। यह ग्रंथ केवल धार्मिक स्तोत्र नहीं थे, बल्कि उनमें प्रकृति, ब्रह्मांड, पर्यावरण और मानव जीवन से जुड़े प्रश्नों के उत्तर निहित थे। यज्ञ, मंत्र और सूक्तों के माध्यम से मानव और प्रकृति के संबंधों को परिभाषित किया गया। इस युग में शिक्षा श्रुति और स्मृति पर आधारित थी, और ज्ञान की निरंतरता मौखिक परंपरा से बनी रही। वैदिक ऋषियों ने भाषाशास्त्र, खगोल, औषधि और संगीत जैसे क्षेत्रों में भी विचार प्रस्तुत किए। इस समय ज्ञान का उद्देश्य केवल जीविका नहीं, बल्कि ऋत और धर्म की खोज माना गया। तथ्यों से स्पष्ट है कि जब यूरोप का ज्ञान-संसार अभी कल्पनाओं और वीरगाथाओं में उलझा हुआ था, तब भारत में व्यवस्थित ज्ञान परम्परा स्थापित हो चुकी थी। भारत के लिए ज्ञान केवल काव्यात्मक सौंदर्य नहीं था, बल्कि जीवन का मार्गदर्शन, सत्य की खोज और विश्व के गूढ़ नियमों को समझने का प्रयास था। यही कारण है कि भारत को उस समय से ही ज्ञान का केंद्र और विश्वगुरु माना गया, जबकि यूरोप को व्यवस्थित बौद्धिक परम्परा विकसित करने में कई शताब्दियाँ और प्रतीक्षा करनी पड़ी।

1) वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल के प्रमुख भारतीय विद्वान और उनका योगदान

विद्वान / परम्परा	कालखंड	प्रमुख योगदान	विशेषता
वैदिक ऋषि (ऋग्वैदिक परम्परा)	वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.)	ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद की रचना	प्रकृति, देवताओं, मानव जीवन और ऋत (सत्य) पर स्तोत्र
ब्राह्मणाचार्य (ब्राह्मण ग्रंथों के रचयिता)	उत्तरवैदिक काल (1000–800 ई.पू.)	यज्ञ-विधान, अनुष्ठान और कर्मकांड की व्याख्या	धर्म और सामाजिक व्यवस्था को व्यवस्थित किया

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

आरण्यककार (आरण्यक ग्रंथ)	उत्तरवैदिक काल (900–700 ई.पू.)	साधना, ध्यान और ब्रह्मज्ञान की व्याख्या	बाह्य यज्ञ से आंतरिक साधना की ओर संक्रमण
उपनिषद्कार ऋषि (याज्ञवल्क्य, श्वेतकेतु आदि)	उत्तरवैदिक काल (800–600 ई.पू.)	आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, कर्म का सिद्धांत	भारतीय दर्शन का मूल आधार स्थापित
शुल्बसूत्रकार (बौधायन, आपस्तंब, कात्यायन)	उत्तरवैदिक काल (800–600 ई.पू.)	ज्यामिति, गणित और मापन की विधियाँ	समकोण त्रिभुज का सिद्धांत (पाइथागोरस प्रमेय)
आयुर्वेदाचार्य (आत्रेय, चरक परम्परा)	उत्तरवैदिक काल (700–600 ई.पू.)	औषधि, चिकित्सा और रोग विज्ञान की प्रारंभिक परम्परा	आगे चलकर *चरक संहिता* का आधार बना
व्याकरणाचार्य (शाकल्य, पाणिनि की पूर्ववर्ती परम्परा)	उत्तरवैदिक काल (600 ई.पू. के आसपास)	धातुपाठ, शब्द संरचना और व्याकरण पर प्रारंभिक कार्य	संस्कृत व्याकरण के व्यवस्थित विकास की नींव

वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल में शिक्षा का स्वरूप

वैदिक और उत्तरवैदिक काल में भारतीय शिक्षा का स्वरूप अत्यंत व्यापक, जीवनोपयोगी और संस्कारप्रधान था। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, आत्मानुशासन और समाजोपयोगी जीवन के लिए तैयारी करना था। शिक्षा की व्यवस्था मुख्यतः गुरुकुल प्रणाली पर आधारित थी, जहाँ विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम में रहकर वेद, उपनिषद, गणित, आयुर्वेद, खगोल, संगीत, युद्धकला और शिल्प का अध्ययन करते थे। शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी और विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे गुरु की सेवा कर आभार प्रकट करें। इस समय शिक्षा का सबसे बड़ा गुण यह था कि यह संपूर्ण जीवन से जुड़ी हुई थी—यज्ञ, अनुष्ठान और धर्म के अध्ययन के साथ-साथ विद्यार्थियों को कृषि, पशुपालन और समाजसेवा में भी प्रशिक्षित किया जाता था। उत्तरवैदिक काल में उपनिषदों के दर्शन ने शिक्षा को गहरी दार्शनिक दिशा दी, जिसमें आत्मा, ब्रह्म और मोक्ष जैसे विषय केंद्र में आए। इसी समय शुल्बसूत्रों के माध्यम से गणित और ज्यामिति का शिक्षण हुआ, जिससे विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन का विकास होता था। आयुर्वेद और चिकित्सा-विज्ञान ने स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा दिया और व्याकरणाचार्यों ने भाषा को परिष्कृत किया। शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह था कि यह मौखिक परंपरा से जुड़ी थी, जिसे श्रुति और स्मृति कहा गया; विद्यार्थी बार-बार उच्चारण और कंठस्थ करने की विधि से ज्ञान को आत्मसात करते थे। गुरुकुलों में अनुशासन, संयम और गुरु-शिष्य का गहरा संबंध शिक्षा का आधार था। इस प्रकार, वैदिक और उत्तरवैदिक काल में शिक्षा न केवल बौद्धिक और दार्शनिक थी, बल्कि व्यावहारिक, नैतिक और आध्यात्मिक भी थी। यही कारण है कि उस समय की शिक्षा ने भारतीय समाज को संगठित, अनुशासित और वैचारिक रूप से उन्नत बनाया, जबकि यूरोप अभी मिथकीय और वीरगाथात्मक स्तर पर था।

निस्संदेह वैदिक काल भारतीय ज्ञान-विज्ञान और शिक्षा का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। इस समय की शिक्षा व्यवस्था अत्यंत उच्च स्तर की, जीवनोपयोगी और चरित्र-निर्माण पर आधारित थी। तथापि, उत्तरवैदिक काल से इसमें कुछ ऐसी सीमाएँ उभरकर सामने आईं, जिन्होंने इसे सर्वसमावेशी और सार्वभौमिक बनने से रोका। सबसे गंभीर समस्या जाति और वर्ग आधारित प्रतिबंध थे। शिक्षा का अधिकार मुख्यतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और आंशिक रूप

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

से वैश्य वर्ग तक सीमित था, जबकि शूद्र और स्त्रियाँ औपचारिक शिक्षा से प्रायः वंचित रहीं। यही कारण है कि आज के समय में इसकी आलोचना का बड़ा आधार सामाजिक असमानता ही है, यद्यपि विद्वानों के बीच इस पर मतभेद भी पाए जाते हैं। दूसरी प्रमुख समस्या यह थी कि शिक्षा का केंद्र धीरे-धीरे धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञकर्म तक सीमित होता चला गया। ब्राह्मण ग्रंथों और आचार्यों ने यज्ञ-विधानों को शिक्षा का मूल अंग बना दिया, जिससे व्यवहारिक और वैज्ञानिक पक्ष अपेक्षाकृत पीछे छूट गया। तीसरी समस्या शिक्षा की मौखिक परंपरा पर अत्यधिक निर्भरता थी। ज्ञान का लेखबद्ध स्वरूप न होने से यह केवल सीमित दायरे में सुरक्षित रहा और समय-समय पर उसमें विकृति या विस्मृति की संभावना बनी रही। इसके अतिरिक्त शिक्षा प्रणाली अत्यधिक गुरु-निर्भर और केंद्रीकृत थी। यदि गुरु का दृष्टिकोण संकीर्ण होता तो विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास भी उसी दायरे में सीमित रह जाता। पाँचवीं समस्या यह थी कि शिक्षा में व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। यद्यपि गणित, आयुर्वेद और शिल्प विद्या जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई, फिर भी सामान्य जनजीवन से जुड़े व्यावसायिक कौशल उपेक्षित रह गए। आर्थिक दृष्टि से भी यह प्रणाली पूरी तरह समान अवसर प्रदान नहीं कर पाती थी। गुरुकुल में निवास का अर्थ था कि विद्यार्थी को परिवार से अलग होकर तपस्या और संयमपूर्ण जीवन जीना पड़ता, जो सबके लिए संभव नहीं था। स्त्रियों की शिक्षा का अवसर समय के साथ अत्यधिक सीमित होता गया, हालांकि वेदों में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों का उल्लेख शिक्षा में उनकी सहभागिता का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा में एकीकरण की चुनौतियाँ एवं समाधान

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाहित करना एक सराहनीय प्रयास है, क्योंकि यह न केवल सांस्कृतिक अस्मिता को पुनर्जीवित करता है बल्कि शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्याधारित और व्यावहारिक बनाता है। किंतु इस एकीकरण की राह में कई चुनौतियाँ उपस्थित होती हैं। सबसे पहले, मानकीकरण की चुनौती है। भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यंत विस्तृत, विविध और बहुआयामी है—वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, शिल्पशास्त्र और दर्शन जैसे अनेकों क्षेत्र इसमें आते हैं। इन सभी को आधुनिक पाठ्यक्रम में किस रूप में सम्मिलित किया जाए, यह एक जटिल प्रश्न है। यदि बिना मानकीकरण के इन्हें प्रस्तुत किया जाता है तो ज्ञान का स्वरूप बिखरा हुआ और असंगत लग सकता है, वहीं अत्यधिक मानकीकरण से इसकी मौलिकता और गहराई खोने का खतरा है। दूसरी चुनौती है शिक्षक प्रशिक्षण। आधुनिक शिक्षा में कार्यरत अधिकांश शिक्षक पारंपरिक भारतीय ज्ञान-विज्ञान से पर्याप्त रूप से परिचित नहीं हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे इसे प्रभावी रूप से पढ़ाने में सक्षम नहीं हो पाते। उदाहरण के लिए, योग, आयुर्वेद या वेदांत के दर्शन को केवल सतही स्तर पर सिखाया जाए तो उसका वास्तविक शैक्षणिक और जीवनोपयोगी मूल्य विद्यार्थियों तक नहीं पहुँच पाता। इसके अतिरिक्त, भाषा और स्रोतों की समस्या भी एक बड़ी बाधा है, क्योंकि प्राचीन ग्रंथ मुख्यतः संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में उपलब्ध हैं, जिन्हें समझने और सरल आधुनिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए विशेष कौशल और अनुवाद की आवश्यकता है।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, मानकीकरण हेतु एक राष्ट्रीय ढांचा विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रमुख शाखाओं को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत कर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। उदाहरणस्वरूप, प्राथमिक स्तर पर नैतिक शिक्षा और कहानियों के माध्यम से भारतीय मूल्य, माध्यमिक स्तर पर गणित, विज्ञान और पर्यावरण में प्राचीन भारतीय योगदान, तथा उच्च शिक्षा स्तर पर दार्शनिक विमर्श, आयुर्वेद, योग और खगोलशास्त्र जैसे विषयों को शामिल किया जा सकता है। दूसरा, शिक्षक प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण केंद्र और कार्यशालाएँ स्थापित की जानी चाहिए, जहाँ

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

शिक्षकों को न केवल ग्रंथों का गहन अध्ययन कराया जाए, बल्कि आधुनिक शैक्षणिक पद्धतियों के साथ इन्हें प्रस्तुत करने का अभ्यास भी कराया जाए। तीसरा, अनुवाद और डिजिटल संसाधन की दिशा में बड़े पैमाने पर कार्य होना चाहिए, ताकि प्राचीन ग्रंथ सरल भाषा, इंटरेक्टिव ई-कोर्स और मल्टीमीडिया सामग्री के रूप में विद्यार्थियों तक पहुँच सकें। चौथा, शोध और नवाचार को बढ़ावा देकर भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक विज्ञान और तकनीक से जोड़ा जा सकता है; जैसे आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान से, या वेदांत को मनोविज्ञान और दर्शन के वैश्विक विमर्श से। अंततः, शिक्षा में इस एकीकरण का उद्देश्य केवल अतीत की गौरवगाथा सुनाना नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को ऐसे मूल्य और कौशल प्रदान करना चाहिए जो वर्तमान समाज की चुनौतियों के समाधान में सहायक हों। इस प्रकार, यदि मानकीकरण, शिक्षक प्रशिक्षण और संसाधन निर्माण पर समुचित ध्यान दिया जाए, तो प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा का एकीकरण न केवल संभव है, बल्कि यह भारतीय शिक्षा को वैश्विक स्तर पर अद्वितीय और प्रभावशाली बनाने का सशक्त आधार भी बन सकता है।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा निस्संदेह विश्व की सबसे समृद्ध और बहुआयामी परम्पराओं में से एक रही है, जिसने शिक्षा, दर्शन, विज्ञान और जीवन मूल्यों के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, गणित, योग और दर्शन जैसी परम्पराएँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारत केवल आध्यात्मिकता का नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि और तार्किक चिंतन का भी अग्रदूत रहा है। किंतु समय के साथ इसमें जाति-आधारित असमानता, मौखिक परंपरा पर अत्यधिक निर्भरता और व्यावहारिक शिक्षा की कमी जैसी सीमाएँ उभरकर सामने आईं, जिन्होंने इसकी सार्वभौमिकता और सर्वसमावेशिता को आंशिक रूप से बाधित किया। आधुनिक समय में जब वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और नैतिक संकट हमारे सामने हैं, तब प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनः शिक्षा में समाहित करना अत्यंत प्रासंगिक है। इसके लिए मानकीकरण, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल संसाधनों का विकास आवश्यक है, ताकि यह परम्परा आधुनिक संदर्भों में व्यावहारिक और प्रभावी बन सके। यदि हम इसके दार्शनिक गहराई और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आधुनिक शिक्षा से संतुलित ढंग से जोड़ें, तो यह न केवल भारतीय शिक्षा को समग्र बनाएगा बल्कि विश्व स्तर पर मानवता को शाश्वत मूल्य और नई दिशा प्रदान करेगा। यही इस परम्परा का पुनर्जागरण और वास्तविक उद्देश्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. कोल्लिपारा, बी. (2016). ट्रेडिशन एंड डिसिप्लिन: हाउ शुड वन रीड एंशिएंट इंडियन टेक्स्ट्स?. *मॉडर्न एशियन स्टडीज़*, 50(4), 1327-1402.
2. पर्रेट, आर. डब्ल्यू. (1999). हिस्ट्री, टाइम, एंड नॉलेज इन एंशिएंट इंडिया. *हिस्ट्री एंड थ्योरी*, 38(3), 307-321.
3. साहू, जी., भुए, सी., एवं बेहेरा, ए. (2025). एंशिएंट इंडियन नॉलेज सिस्टम्स एंड मॉडर्न लर्निंग: एन एनालिसिस ऑफ पंच कला. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (IJSSR)*, 2(4), 326-338.
4. सिंह, बी. (2025). इंडियन नॉलेज सिस्टम्स: प्रिज़र्विंग एंशिएंट विजडम इन कंटेम्पररी कॉन्टेक्स्ट. *नवीन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी साइंसेज़ (NIJMS)*, 1(4), 49-55.
5. सेनगुप्ता, एन., सेनगुप्ता, एन., एवं घोष. (2019). ट्रेडिशनल नॉलेज इन मॉडर्न इंडिया. स्प्रिंगर इंडिया.

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved